अध्याय-6

जीवन के विभिन्न आयाम

याद कीजिए एक ऐसी कहानी जो आपके नाना–नानी या दादा–दादी ने आपको सुनाई हो। उनसे पूछिए कि यह कहानी उनको किसने सुनाई। क्या आप स्वयं भी अपने बच्चों को यह कहानी सुनाएँगे?

हड़प्पा सभ्यता के नगरों के पतन के समय (लगभग आज से 3700 वर्ष पहले) एक अलग भाषा बोलने वाले लोग पश्चिमोत्तर भारत में बसने लगे। इन लोगों की पहचान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तरपर एक विशिष्ट समूह के रूप में की जाती है। इनके बारे में हमें साहित्यिक एवं कुछ पुरातात्विक स्रोतों के माध्यम से जानकारी मिलती है। इन स्रोतों में वेदों का विशेष महत्व है। वेदों की संख्या चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वैदिक साहित्य दो श्रेणियों में विभक्त है। पूर्व वैदिक या ऋग्वैदिक साहित्य और उत्तरवैदिक साहित्य। पूर्ववैदिक साहित्य के अंतर्गत ऋग्वेद को रखा जाता है, जबकि उत्तरवैदिक साहित्य के अन्तर्गत शेष तीन वेद (यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् आते हैं। वैदिक साहित्य के आधार पर ही वैदिक युग को दो कालखंडों में विभाजित किया जाता है। ऋग्वैदिक युग (1500 ई.पू. से 1000 ई. पू.) एवं उत्तरवैदिक युग (1000 ई.पू. से 600 ई.पू.)।

वेद मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचे थे। विभिन्न देवी–देवताओं की स्तुति में रचे गए मंत्र या प्रार्थनाओं (सुक्त) को लोगों ने कंठस्थ रखकर अनेक पीढ़ियों तक सुरक्षित रखा।

वैदिक साहित्य

वेद–4
ब्राह्मण–9
अरण्यक–6
प्रारंभिक उपनिषद्–13
कुल उपनिषद्–108

इन्हें कई सदियों के बाद लिखा गया। इसलिए वेद को 'श्रुति' (सुना हुआ) भी कहते हैं।

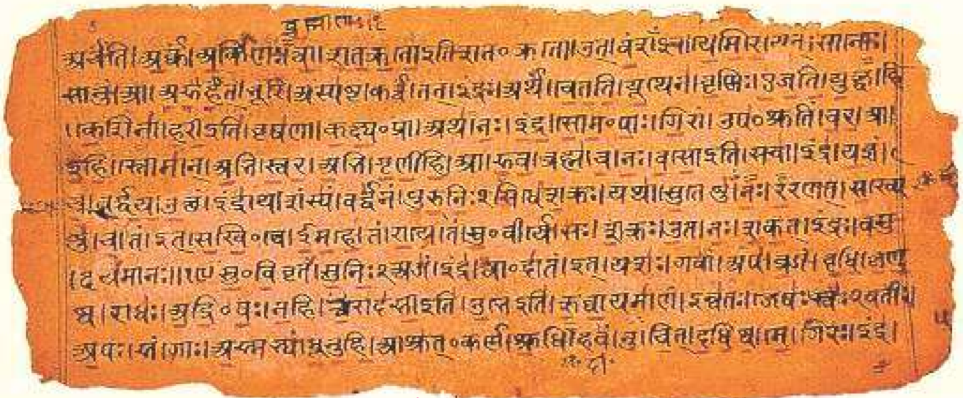

ऋगवेद का एक अंश

वेद की भाषा को प्राक् संस्कृत या वैदिक संस्कृत कहते हैं। आप स्कूल में जिस संस्कृत भाषा को पढ़ते हैं उससे यह थोड़ी भिन्न थी। इन वेदों में प्रार्थनाओं की रचना करने वाले लोग कभी–कभी खुद को 'आर्य' कहते थे। आर्यों के विरोधी दास एवं दस्युओं के बारे में कहा गया है कि वे आर्यों के देवताओं में श्रद्धा न रखने वाले तथा यज्ञ न करने वाले थे। अतः उन्हें आर्यों का बड़ा शत्रु बताया गया है। इतिहासकारों का मानना है कि शायद यह दूसरी भाषा भी बोलते हों।

आर्य कौन थे?

'आर्य' शब्द का अर्थ एक विशेष भाषा बोलने वाले व्यक्तियों के समूह से है, जिन्होंने सर्वप्रथम पश्चिमोत्तर भारत में अपना निवास स्थान बनाया और भारत में एक नयी संस्कृति को विकसित किया, जो वैदिक संस्कृति के नाम से जानी जाती है।

भारोपीय भाषा–वर्ग

संस्कृत भाषा भारोपीय (भारत–यूरोप) भाषा वर्ग का अंग है। भारत की अनेक भाषाएँ–असमिया, गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी और सिंधी तथा यूरोप की बहुत–सी भाषाएँ जैसे–अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, ग्रीक (यूनानी) स्पैनिश आदि इसी परिवार से जुड़ी हुई हैं। इन्हें भाषा परिवार इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके अनेक शब्द एक जैसे थे। उदाहरणस्वरूप–मातृ (संस्कृत) माँ (हिन्दी) मदर (अंग्रेजी) मेटर (जर्मनी) शब्द को देखे।

विगत वर्षों में वैदिक युग से संबंधित पुरातात्विक प्रमाण भी मिले हैं। जिन क्षेत्रों में आर्यों की संस्कृति का विकास हुआ है, वहाँ ऐसे लोगों की बस्तियाँ थीं जो पशुपालक और कृषक थे और खास प्रकार की मिट्टी के चित्रित धुसर रंग के बर्तनों का प्रयोग करते थे। इसलिए अब साहित्यिक और पुरातात्विक, दोनों ही स्रोतों के आधार पर आर्यों के विषय में जान सकते हैं।

धूसर मृद्भांड

आर्यों का बसाव

वैदिक आर्य कई समूहों में भारत आये। ऋग्वेद में आर्य निवास स्थल के लिए 'सप्तसैन्धव' शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसे आजकल हम पंजाब (वर्तमान भौगोलिक स्थिति के अनुसार भारत और पाकिस्तान का पंजाब प्रांत) के नाम से पुकारते हैं। उत्तर–वैदिक युग में सप्त सैन्धव प्रदेश से पूर्व की ओर बढ़ते हुये आर्य लगभग पूरे गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में बस गये। शतपथ ब्राह्मण (उत्तर वैदिक युग का एक महत्वपूर्ण स्रोत) से पता चलता है कि आर्यों का फैलाव उत्तर वैदिक युग में वर्तमान उत्तरी बिहार के गंडक नदी तक हो गया था।

सप्तसैन्धव	– सिन्धु एवं उसकी पाँच सहायक नदियाँ–सतलज, व्यास, झेलम, चिनाब, रावी तथा सरस्वती, दृषद्वती नदियों का क्षेत्र।
गंगा यमुना दोआब	– गंगा एवं यमुना नदी के बीच का क्षेत्र।

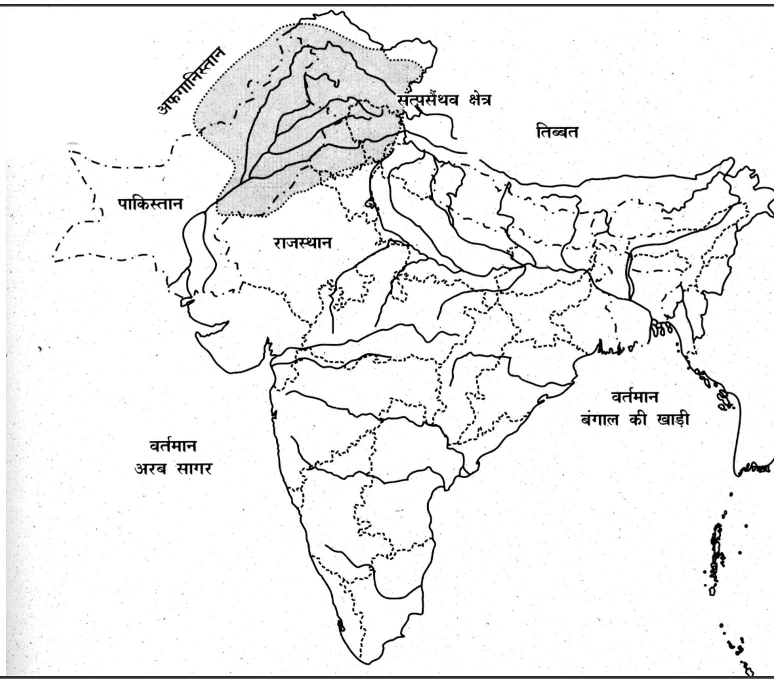

प्रारंभिक वैदिक युग के भौगोलिक विस्तार का मानचित्र

ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.)

क्या आप किसी परिवार को जानते हैं, जिनकी आर्थिक व्यवस्था पशुपालन से जुड़ी हो?अब उनसे पूछिए–क्या उनकी धार्मिक मान्यताएँ भी पशुपालन से जुड़ी हैं?

ऋग्वेद से हमें पता चलता है कि जिनके पास अधिक गाय थीं, वह धनी माने जाते थे और गाय को लेन–देन का एक खास साधन माना जाता था। गायों को प्राप्त करने के लिए आर्यों का एक कबीले से दूसरे कबीले तथा पहले से रहने वाले लोगों के साथ अक्सर युद्ध हुआ करता था। गौधन रक्षा करने के लिए एक 'सरदार' या 'राजन' का चुनाव किया जाता था जो बहादुर एवं कुशल योद्धा हो। ऋग्वैदिक राजन को किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र का स्थायी रूप से शासन करने वाला राजा नहीं माना जा सकता। क्योंकि राजनीतिक अवधारणाओं में क्षेत्रीयता को इंगित करने वाले शब्द जैसे–जनपद, राष्ट्र, राज्य का उल्लेख कम ही मिलता है। अतः ऋग्वैदिक काल का राजन् एक कबीले के मुखिया से अधिक कुछ नहीं था।

कबीला –

कबीले में एक वंश या परिवार के कई पीढ़ी के लोग एक साथ रहते थे।

ऋग्वैदिक काल में आम लोगों की संस्था के रूप में 'विदथ' का सबसे ज्यादा महत्व था। लेकिन धीरे–धीरे विदथ का महत्व घटता गया और इसका स्थान 'सभा' और 'समिति' ने ले लिया। 'सभा' का विशिष्ट स्थान था जिसके सदस्य केवल प्रतिष्ठित लोग हुआ करते थे जबकि 'समिति' आम लोगों की संस्था थी। इन संस्थाओं की बैठक में राजा का भाग लेना अनिवार्य था। इनकी बैठकों में समस्याओं का समाधान आपस में सलाह–मशविरा से करते थे। इन संस्थाओं की बैठक में महिलाएँ भी भाग लेती थीं। इन संस्थाओं में कबीले (जन) के लोग युद्ध में प्राप्त धन का बँटवारा एवं राजा का चुनाव करते थे। आवश्यकता पड़ने पर समिति के सदस्य युद्ध में सैनिक कार्य भी करते थे।

ऋग्वैदिक काल में आर्यों का मुख्य पेशा पशुपालन था। इसके लिए उन्हें चारे की तलाश में अलग–अलग स्थानों पर जाना पड़ता था। एक जगह चारा खत्म हो जाने पर वे दूसरी जगह पर चले जाते थे। इस कारण विभिन्न कबीलों का किसी खास क्षेत्र पर अधिकार नहीं होता है। राजन् – किसी क्षेत्र का स्वामी नहीं होता था – बल्कि कबीले के सभी लोगों पर उसका शासन होता था। उसका चुनाव कबीले के सभी लोग मिलकर करते थे। स्थायी रूप से नहीं बसने के कारण वे खेती भी नहीं करते थे। हमने देखा है कि खेती करने के लिए एक स्थान पर कम से कम तीन–चार महीने तो रहना ही पड़ता है तभी फसल पक कर तैयार हो

जाती है। मगर हमें कुछ स्रोतों से पता चलता है कि वे जौ (यव) की खेती करते थे। जौ की फसल आम तौर पर कम समय में तैयार हो जाती है। इस कारण इस फसल को उगाना उनके लिए आसान होता था। कुछ अन्य स्रोतों से हमें पता चलता है कि वे स्थानीय निवासियों (दास, वस्तुओं) से गेहूँ आदि फसल प्राप्त करते थे। इन फसलों के बदले दूध, घी आदि वस्तुएँ वे उन्हें देते थे।

गाय के अतिरिक्त भेड़, बकरियाँ एवं घोड़े पाले जाते थे। पशुपालन की तुलना में कृषि का धंधा कम था। क्योंकि ऋग्वेद में एक अनाज 'यव' का उल्लेख है जिनकी पहचान जौ के रूप में की जाती थी। जब हम शिल्प की ओर ध्यान देते हैं तो हमें ऋग्वेद में शिल्प कला का कम ही वर्णन मिलता है। वर्णित शिल्पकारों में चर्मकार, बढ़ई, धातु का काम करने वाले (धातुकर्मी) तथा कुम्हार शामिल हैं। बढ़ई, धातुकर्मी एवं रथकार की रथों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका थी। घोड़े से जुते हुये रथ, जो युद्ध में सफलता के लिए निर्णायक माने जाते थे। बुनाई एक घरेलु शिल्प था, जो महिलाओं के द्वारा किया जाता था।

रथ

लोगों का जीवन प्रकृति पर बहुत हदतक निर्भर करता था। ऋग्वेद में प्राकृतिक शक्तियों से जुड़े कई देवी–देवताओं के सम्मान में मंत्रों की रचना की गई हैं, जिनमें इन्द्र, अग्नि, सोम प्रमुख है। इन्द्र युद्ध का देवता, अग्नि आग का देवता, सोम एक पौधा है, जिससे एक प्रकार का पेय बनाया जाता था। देवी–देवताओं की पूजा धन, संतान एवं युद्ध में विजय की कामना के उद्देश्य से की जाती थी। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मंत्रों का उच्चारण तथा यज्ञों में आहुति दी जाती थी। घी, अनाज और कभी–कभी जानवरों की भी आहुति दी जाती थी।

जब आर्य लोग भारत में आये तो वे तीन सामाजिक वर्गों में विभाजित थे–योद्धा, पुरोहित एवं साधारण जन। ऋग्वेद के मंत्रों से ऐसी जानकारी मिलती है कि समाज में वर्ग भेद की स्थिति नहीं बन पाई थी। ऋग्वेद के पुरुषसुक्त में ब्राह्मण, राजन्य (क्षत्रिय या योद्धा) वैश्य एवं शुद्र अर्थात चार वर्णों की कल्पना की गई थी। परंतु इस काल में वर्ण व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकी थी।

उत्तरवैदिक काल (1000 ई.पू. से 600 ई.पू.)

इस काल में लगभग सम्पूर्ण उत्तरी भारत में जीवन के सभी पहलुओं में निश्चित परिवर्तन हो रहे थे। इस काल में आर्यों ने पशुपालन के स्थान पर खेती/कृषि को मुख्य पेशा बनाया; एक स्थान पर बस कर रहने लगे और कबीलों का निश्चित क्षेत्र तय हो गया। इस काल में उत्तरी भारत में लौह युग का आरंभ हुआ। लौह तकनीक का प्रयोग आरंभ में युद्ध के अस्त्रों के लिए और फिर धीरे–धीरे कृषि एवं अन्य आर्थिक कार्यो में होने लगा। हस्तिनापुर, आलमगीरपुर, अतरंजीखेड़ा आदि स्थानों पर लोहे के युद्ध के अस्त्र–शस्त्रों के अवशेष मिले हैं। लोग कच्चे मकानों में रहते थे जिनकी छत फूस और सरकंडों की बनी होती थी। लोग मिट्टी के बर्तन भी बनाते थे। इन पुरास्थलों में कुछ विशेष प्रकार के बर्तन मिले हैं, जिन्हें 'चित्रित धूसर पात्र' के रूप में जाना जाता है। पृष्ठ 52 के चित्र पर नजर डालिए जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन बर्तनों पर चित्रकारी की गई है। ये आमतौर पर सरल रेखाओं तथा ज्यामितीय आकृतियों के रूप में हैं। स्पष्ट है कि उत्तरवैदिक काल के लोग स्थायी रूप से जीवन व्यतीत करने लगे थे।

ऋग्वैदिक् कालीन अनेक छोटे–छोटे कबीले (जन) एक–दूसरे में विलीन होकर बड़े–बड़े 'जनपद' को जन्म दे रहे थे। उदाहरणार्थ–पुरु एवं भरत जन मिलकर 'कुरु' जनपद तथा दुर्वश एवं क्रिवि जन मिलकर 'पांचाल' जनपद कहलाए।इस काल में कुछ लोग बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन कर राजा के रूप में प्रतिष्ठित हुये। अश्वमेध यज्ञ एक ऐसा ही आयोजन था। इसमें एक घोड़े को राजा के लोगों की देख–रेख में स्वतंत्र रूप से विचरण के लिए छोड़ दिया जाता था। यदि कोई दूसरा राजा इस घोड़े को रोकता था तो उसे अश्वमेध यज्ञ करने

वाले राजा के साथ युद्ध करना पड़ता था। अगर किसी क्षेत्र से घोड़े को जाने दिया जाता था तो इसका मतलब यह होता था कि अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा उससे ज्यादा शक्तिशाली था। यज्ञ के अवसर पर राजा की विजयों तथा अन्य गुणों का गान किया जाता था। महायज्ञों को करने वाले राजा अब 'जन' के राजा न होकर 'जनपदों' के राजा माने जाने लगे। राजा की शक्ति में वृद्धि के साथ–साथ ऋग्वैदिक 'सभा' एवं 'समिति' जैसी सामुदायिक संस्थाएँ कमजोर पड़ने लगी और धीरे–धीरे वे राजा की परामर्श देने वाली संस्था बन गई। ऋग्वैदिक काल में राजा को 'बलि' के रूप में स्वेच्छा से प्राप्त होने वाला 'नजराना' या 'उपहार' इस काल में अनिवार्य कर में बदल गया।

उपहार एवं नजराना

जहाँ 'कर' नियमित ढंग से इकट्ठे किए जाते थे वहीं 'नजराना' अनियमित रूप से जब भी संभव हो, इकट्ठा किया जाता था। ऐसे नजराने विविध पदार्थों के रूप में प्रायः ऐसे लोगों से लिए जाते थे जो स्वेच्छा से इसे देते थे।

उत्तरवैदिक काल में कई ग्रंथ रचे गए, जिसके विषय में हम पीछे पढ़ चुके हैं। पुरोहितों द्वारा रचित इन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के सामाजिक नियमों के बारे में बताया गया है। उस समय समाज कई समूहों में बँटा हुआ था जिनमें पुरोहित, योद्धा, कृषक, पशुपालक, व्यापारी, शिल्पकार, श्रमिक, शिकारी, मछली पकड़ने वाले लोग शामिल थे। जहाँ पुरोहितों तथा योद्धाओ का जीवन वैभवशाली था और कृषक एवं व्यापारी धनवान थे, वहीं दूसरी ओर पशुपालक, शिल्पकार, श्रमिक, शिकारी, मछली पकड़ने वाले लोग निर्धनता का जीवन बिताते थे।

पुरोहित–

याज्ञिक क्रियाओं एवं अनुष्ठान को सम्पादित कराने वाले लोग।

पुरोहितों ने लोगों को चार वर्गों में विभाजित किया, जिन्हें 'वर्ण' कहते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक वर्ण के अलग–अलग कार्य निर्धारित थे। पहला वर्ण 'ब्राह्मणों' का था। उनका काम वेदों का अध्ययन–अध्यापन और यज्ञ करना था जिनके लिए उन्हें उपहार मिलता था।

दूसरा स्थान शासकों का था, जिन्हें 'क्षत्रिय' कहा जाता था। उनका काम युद्ध करना और लोगों की रक्षा करना था। तीसरे स्थान पर 'वैश्य' थे। इनमें कृषक, पशुपालक और व्यापारी आते थे। क्षत्रिय एवं वैश्य दोनों को ही यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। वर्णों में अंतिम स्थान 'शुद्रों' का था। इनका काम अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना था। प्रायः औरतों को भी शुद्रों के समान माना गया। महिलाओं तथा शुद्रों को वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं था। पुरोहितों के अनुसार सभी वर्णों का निर्धारण जन्म के आधार पर होता था। उदाहरण के तौर पर ब्राह्मण माता–पिता की संतान ब्राह्मण ही होती थी।

उत्तरवैदिक काल में कृषि लोगों का प्रमुख धंधा था। जंगलों को जलाकर या कुल्हाड़ी से काट कर भूमि को खेती के योग्य बनाया जाता था। लोहे के फाल से गहरी जुताई करना संभव हो गया था। कृषि कार्य में प्रयुक्त होने वाले तरीकों–जुताई, बुआई, कटाई, ओसाई आदि की जानकारी लोगों को थी। वे धान, गेहूँ, जौ, दालें, गन्ना, कपास, तिल, सरसों जैसी फसलें उगाते थे।

उत्तरवैदिक काल में धर्म की दो धाराएँ दिखाई पड़ती हैं– एक का बल कर्म पर था और दूसरी का ज्ञान पर। यज्ञ संबंधी क्रियाओं का इस काल में बहुत विकास हुआ। राजा अश्वमेध, वाजपेय, राजसूय जैसे बड़े यज्ञ कराने लगे। याज्ञिक क्रियाओं को कर्मकाण्ड कहा जाता था। यज्ञ का सम्पादन करने में पुरोहितों की आवश्यकता होती थी। ये पुरोहित यजुर्वेद में वर्णित विधियों के अनुसार यज्ञ का आयोजन करके देवताओं को प्रसन्न करते थे। इसका उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ाना एवं वैदिक जनों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना था। धार्मिक जीवन की दूसरी धारा उपनिषदों के अद्वैत सिद्धांत में देखने को मिलती है। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा और मृत्यु जैसे गूढ़ विषयों के रहस्य जानने का प्रत्यन किया गया है। (जिसका अध्ययन आप अध्याय 8 में करेंगे)

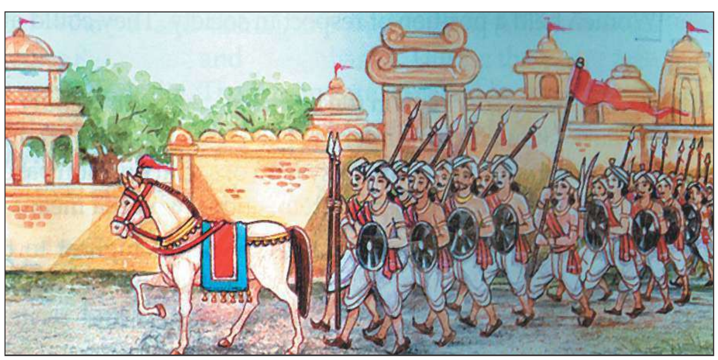

अश्वमेध यज्ञ

वैदिककालीन शिक्षा

वैदिक काल में शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी, शिक्षार्थियों से वेदों के मूल पाठ को कंठस्थ करवाया जाता था। इसके लिए उन्हें वैदिक मंत्रों को सरल उच्चारण सिखाया जाता था। वेदों के अलावा गणित एवं व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को गुरु के आश्रम में 12 वर्षों तक रहना पड़ता था।

गुरु–शिष्य परम्परा : एक झलक

आज से हजारों वर्ष पहले की बात है। भारत में आज की तरह पाठशालाएँ नहीं थीं। छात्र गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। आश्रम वनों में होते थे और ऋषि–मुनि शिष्यों को शिक्षा देते थे। ऐसा ही एक आश्रम आमोद धौम्य ऋषि का था। यह आश्रम शिक्षा–दीक्षा के लिए दूर–दूर तक प्रसिद्ध था। विद्यार्थी यहाँ रहकर विद्या प्राप्त करते थे। वे गुरुजी के घर का काम भी करते थे। आमोद द्यौम्य के पास धान का एक खेत था। इसी की उपज से आश्रम का काम चलता था। विद्यार्थी बारी–बारी से खेत का काम करते थे। ऋषि के शिष्यों में एक था आरूणि। एक दिन खेत का काम करने की बारी उसकी थी। उस दिन वर्षा हो रही थी।

गुरुजी ने आरूणि से कहा– ''वत्स जाओ, जाकर देखो कि कहीं पानी खेत की मेड़ न तोड़ दे। आरूणि खेत पर पहुँचा। आरूणि ने देखा कि एक जगह पर खेत की मेड़ से पानी रिस रहा है। उसने मेड़ पर मिट्टी और कंकड़–पत्थर डालकर पानी को रोकने की कोशिश की। फिर भी मेड़ की दरार चौड़ी होती गई। उसकी चिंता बढ़ गई। वह तुरंत खेत में पड़ी दरार के मुहाने पर लेट गया। खेत में से पानी निकलना बंद हो गया। ठंड के कारण उसका शरीर शिथिल पड़ने लगा था। रात हो गई थी। आरूणि के अभी तक न आने से गुरुजी व्याकुल हो उठे। गुरुजी अपने चार–पाँच शिष्यों के साथ आरुणि को ढूंढते खेत पर पहुँचे। खेत के चारों ओर घना अंधेरा था। आरूणि को कहीं नहीं देख उनकी चिंता बढ़ गई। वे जोर से चिल्लए– ''बेटा आरुणि, बेटा आरुणि।'' आरुणि ने गुरूजी की आवाज पहचान कर बड़ी कठिनाई से बोल सका–''गुरुजी में यहाँ हूँ।'' गुरूजी जल्दी से वहाँ पहुँचे। गुरूजी ने आरूणि को देखा तो अचम्भे में रह गये। उन्होंने आरूणि को उठाया और सीने से लगा लिया। ऐसा था गुरू भक्त आरूणि। बड़ा होकर यही आरूणि वेदों और शास्त्रों का बहुत बड़ा ज्ञाता बना और उद्दालक ऋषि के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

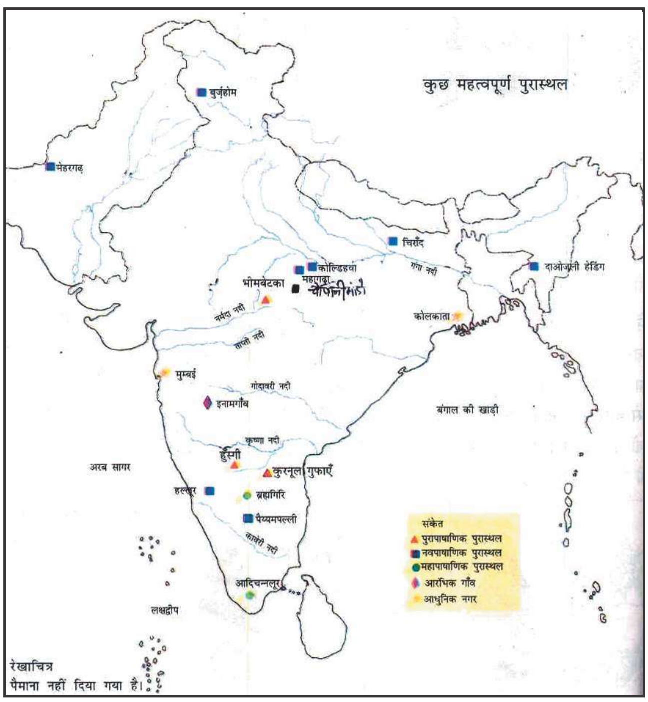

ताम्रपाषाण कालीन भारत का मानचित्र

इनामगाँव : एक ताम्रपाषाण बस्ती

जिस समय भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिम में वेदों की रचना हो रही थी, उस समय पश्चिम भारत में एक अलग समाज एवं संस्कृति का विकास हो रहा था। मानचित्र में इनामगाँव की पहचान करें?इनामगाँव, महाराष्ट्र राज्य में घोड़ नदी के तट पर स्थित एक ताम्रपाषाण बस्ती थी। इस जगह पर 3600 से 2700 साल (1600 ई०पू० से 700 ई०पू०) पहले लोग रहते थे, जो वैदिक आर्यों के समकालीन थे। इस पुरास्थल की खुदाई से पत्थर के अलावा ताम्बा धातु के बने औजार एवं उपकरण प्राप्त हुये हैं। इनामगाँव के लोग मिट्टी की बनी झोपड़ियों में रहते थे, जिसकी छत फूस की बनी होती थी, जिसे गारे से ढक दिया जाता था। यहाँ के लोग नारंगी रंग से रंगे मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे, जिनपर काले रंग की ज्यामितीय आकृतियाँ होती थी।

इनामगाँव के लोग जौ, गेहूँ, मटर, मसूर, एवं धान की खेती करते थे। गाय, बैल, भेड़, बकरी, कुत्ता, घोड़ा आदि उनके पालतू पशु थे। खुदाई में इन पशुओं की हड्डियाँ प्राप्त हुई है। कई हड्डियों पर कटे निशान से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि लोग इन्हें खाते थे।

इनामगाँव के ताम्रपाषाण संस्कृति के लोगों का सबसे रोचक पहलू मृतकों को दफन करने का तरीका था। एक आदमी को मकान के आँगन में मिट्टी के बने संदूक में दफनाया गया था। यह मकान बस्ती के बीच में बसा सबसे बड़ा मकान था। सामान्यतः मृतकों को मिट्टी के बर्तनों के साथ दफनाया जाता था, जिनमें शायद खाने–पीने की वस्तुएँ रखी होती थी। कब्रों में मृतक के साथ औजार एवं हथियार, गहने आदि भी खुदाई में मिले हैं।

अभ्यास

आइए याद करें :

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(क) वेदों की कुल संख्या कितनी है?

(i) 3 (ii) 4

(iii) 5 (iv) 8

(ख) पुरूषसूक्त किस वेद में है?

(i) ऋग्वेद (ii) सामवेद

(iii) यजुर्वेद (iv) अथर्ववेद

(ग) ऋग्वैदिक काल का प्रमुख व्यवसाय क्या था?

(i) कृषि (ii) पशुपालन

(iii) शिल्प (iv) उद्योग

(घ) इनामगाँव किस राज्य में स्थित है?

(i) बिहार (ii) उत्तरप्रदेश

(iii) पंजाब (iv) महाराष्ट्र

2. खाली स्थान को भरें :

(क) आर्यों का विस्तार बिहार के .... नदी तक था।

(ख) सबसे प्राचीन वेद .... है।

(ग) ऋग्वैदिक आर्य .... अनाज पैदा करते थे।

(घ) इनामगाँव .... बस्ती है।

(ङ) वैदिक कबीले के प्रधान को .... कहा जाता था।

3. अपने उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दें :

(क) ऋग्वैदिक आर्य पशुपालन करते थे।

(ख) आर्यों के जीवन में गाय और घोड़े का महत्वपूर्ण स्थान था।

(ग) वैदिक क्षेत्र तमिलनाडु तक विस्तृत था।

(घ) आर्य लोग नगरों में निवास करते थे।

(ङ) इनामगाँव के लोग मृतको जला देते थे।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :

(क) वेदों के नाम लिखें?

(ख) आर्य लोग भारत के किन–किन क्षेत्रों में निवास करते थे?

(ग) उत्तरवैदिक कालीन समाज का उल्लेख करें?

(घ) इनामगाँव के लोग मृतकों का अंतिम संस्कार किस प्रकार करते थे। प्रकाश डालें?

5. आओ चर्चा करें :

1. आर्य जिन देवताओं की पूजा करते थे, उनकी सूची बनाएँ तथा यह बताएँ कि इनमें किन देवताओं की पूजा आजकल की जाती है?
2. ऋग्वैदिक आर्य खेती नहीं करते थे?इसके कारण बताएँ?

6. आओ करके देखें :

1. धार्मिक पुस्तकों की एक सूची बनायें तथा यह बतायें कि वे किस धर्म से संबंधित है।?
2. कुछ ऐसे शब्द लिखें जो दो भाषाओं में समान रूप से प्रयोग किये जाते हैं?

7. बोध प्रश्न :

1. पुराने समय में विद्यार्थी किस पद्धति से शिक्षा प्राप्त करते थे?
2. अरूणि के आश्रम और आपकी पाठशाला में क्या अंतर देखते हैं?